

भगत नामदेव – सबद ४९

आउ कलंदर केसवा ॥

रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६७

आउ कलंदर केसवा ॥

करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥

जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥

चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥१॥

छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥

भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥२॥

देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥

बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥

भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥

नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥

सार: जब न्यायिक संस्थाएँ ही अन्याय का माध्यम बन जाती हैं तब कमज़ोर लोगों के पास कोई बाहरी सहारा नहीं बचता। ऐसे समय में, हर व्यक्ति को अपने अंतर्मन में न्याय की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि संस्थाएँ नाकाम हो सकती हैं, सत्ता भ्रष्ट हो सकती है, धार्मिक मान्यताएँ कट्टर हो सकती हैं और सामाजिक ढाँचे कमज़ोर पड़ सकते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, सत्यनिष्ठा ही मानवीय गरिमा का सबसे बड़ा सहारा बनती है। सत्य के प्रति यही अटूट निष्ठा व्यक्ति और अधिक न्यायपूर्ण दुनिया की आशा, दोनों की रक्षा करती है।

आउ कलंदर केसवा ॥

केशव, कलंदर के रूप में प्रकट हुए हैं। यह छवि दिव्यता के दो रूपों, सूफ़ी संत और हिंदू देवता, दोनों को साथ लाती है जो सामाजिक भेदभाव और धार्मिक सीमाओं से ऊपर होने का प्रतिनिधित्व करते हैं।

करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥

वह अब्दाली, विनम्र-भक्त संत का वेश धारण करते हैं। यह विनम्रता को ऐसी मानसिकता के रूप में अपनाने की ओर इशारा करता है जो भीतर से स्पष्ट, खुली और बाहरी मान्यता की चिंता से मुक्त हो। (विराम)

जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥

जिन्होंने आकाश को अपनी टोपी और सातों पाताल को अपना जूता बनाया है। यह संतोष को ऐसी आंतरिक विशालता के रूप में दर्शाता है जो सर्वव्यापकता और आत्म-चिंतन को समाहित करती है और स्वयं के मूल स्वरूप की खोज करती है।

चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥ १ ॥

चमड़े से ढका शरीर ही आपका मंदिर है, इस तरह सर्वव्यापी स्रोत साकार रूप लेता है। यह पुष्टी करता है कि सर्वव्यापी ऊर्जा हमारे भौतिक अस्तित्व से दूर नहीं है, यह जीवन के हर पहलू में निवास करती है। (१)

छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥

छप्पन करोड़ रूप आपका पहनावा हैं और सोलह हजार अभिव्यक्तियों के रूप, जीविका देते हैं। इतनी बड़ी संख्या का यह उल्लेख अनंत सृष्टि के लिए रूपक है जो सार्वभौमिक नियमों के तहत संचालित होती है।

भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥ २ ॥

विशाल भौतिक और आध्यात्मिक तत्व, आपकी गदा समान हैं, सार्वभौमिक नियमों का वह माध्यम जो समस्त संसार को बनाए रखता है और उसका पोषण करता है। यह संदेश देता है कि अस्तित्व में मौजूद हर वस्तु आपस में जुड़ी है और एकता के सिद्धांत का अभिन्न अंग है। (२)

देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥

शरीर एक मस्जिद है और मन उसके मौलाना के रूप में संतुलन की नमाज़ अदा करता है। यह बताता है कि जब शरीर को जीवित पवित्र स्थान माना जाता है और मन ज्ञान से प्रकाशित होता है तब जीवन स्वाभाविक सामंजस्य में रहता है।

बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥

माया के साथ मिलन से, आपका निराकार रूप एक आकार ले लेता है। यह प्रतीक है कि जीवन के सभी रूप निरंकार की अभिव्यक्ति हैं, एक अदृश्य, निराकार चेतना जो आकार के माध्यम से स्वयं को प्रकट करती है। (३)

भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥

जब मैं भक्ति कर रहा था तब मेरा मंजीरा छीन लिया गया। मैं किससे शिकायत करूँ? यह गहन आध्यात्मिक सवाल बन जाता है, जब समाज ही अन्यायपूर्ण हो जाए तब कमज़ोर व्यक्ति न्याय के लिए कहाँ जाए।

नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥

नामदेव के स्वामी अंतर्ज्ञानी हैं जो सभी लोकों में विचरण करते हैं। यह उस सर्वव्यापी उपस्थिति की ओर इशारा करता है जो सबसे निकट है, सभी अनुभवों से अवगत है, फिर भी उनसे अलग, उनके पार है। (४)(१)

तत्त्व: भगत नामदेव यह संदेश देते हैं कि स्पष्ट और शांत मन हमें पक्षपात, डर और निरंतर बाहरी मान्यता की चाहत के बोझ से मुक्त कर सकता है। जागरूकता से समृद्ध खुला मन कठोर विचारों, अंतहीन इच्छाओं और सामाजिक उम्मीदों के दबाव से ऊपर उठ जाता है। यह मन जहाँ भी सच्चाई मिलती है, उसे अपनाता है और ज़िंदगी को विनम्रता से जीता है। मन की इस आज़ादी की स्थिति में स्पष्टता बढ़ती है, दया का भाव पनपता है और एकत्व की स्वाभाविक अनुभूति सहज रूप से प्रकट होने लगती है, यही जागरूकता अधिक सामंजस्यपूर्ण जीवन की ओर हमारा मार्गदर्शन करती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com